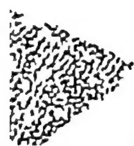
सुरजीत प्रकाशन, बीकानेर

कागज का घर



नवल बीकानेरी

मूल्य तीस रुपये मात्र / प्रथम सस्करण श्रावण १९८४ / आवरण पकज गोस्वामी / प्रकाशक सुरजीत प्रकाशन, व्यापारियो का मोहल्ला, यूनानी चिकित्सालय के सामने, बीकानेर / मुद्रक कोणार्क प्रिटर्स द्वारा रूपाभ प्रिटर्स, दिल्ली-३२

KAGAZ KA GHAR Naval Bikaneree Rs 30.00

अपने इकलौते वेटे नवीन की पुण्य स्मृति मे



एक सागर शीशे मे वन्द है
दूजा सागर आखो मे
प्यार के नग्मे कैसे गाए
जहर भरा है सासो मे
वचपन रूठा सपना टूटा
जीवन है तूफानो मे
कल तक हम गुलशन मे थे
अव पहुच गये वीरानो मे
एक सागर शीशे मे वन्द है

—नवल वीकानेरी

भूमिका

मानव सुख की तलाश आदिकाल से करता आ रहा है। सुख क्या है और कैसे प्राप्त हो, इसकी व्याख्या भी अनेक प्रकार से की गयी है। मानव-स्वभाव का गहन ज्ञान रखनेवाले भारतीय ऋषियों ने अपने अनुभूत सत्य को इस प्रकार वाणी दी—

'यो वै भूमा, तत्सुखं, नाल्पे सुखमस्ति'

—छान्दोग्य उपनिषद् ७/२३

'भूमा' का भाव कैसे बने, इसके लिए व्यापक दृष्टि अपनाने की बात कही गयी। पंडित और ज्ञानी उसी को माना गया जो सभी में परमात्म तत्त्व के दर्शन करता है। ऐसे व्यक्ति के लिए तो—

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'

—छा० उ० ३/१४/१

यही बात मुण्डकोपनिषद् मे कही गयी है—

'सर्वं ह्येतद् ब्रह्म'

—मु० उ० २

इस साधना-पथ पर चलते-चलते जो परिणति होती है उसे बृहदारण्यक उपनिषद् में परम सत्य की प्राप्ति के रूप में बताया गया है—

'अहं ब्रह्म अस्मि'

—बृ० उ० १/४/१०

[illegible] की इस भूमिका में कुछ इने-गिने लोग ही पहुंच पाते हैं। इनमें कवि भी हैं। कवि के [illegible] स्वरूप को ध्यान में रखकर ही उसे ईश्वर का पर्याय मानकर

चानक
ऑरगजे

पद्मावत के अन्त में लिखा है—

मैं एहि अरथ पंडितन्ह बूझा।
तिन्ह कहा हम किछु न सूझा॥

यदि कवि की उक्ति कहीं स्पष्ट न हो तो इसके लिए उसे दोष नहीं दिया जा सकता। उसने तो अपने भावावेश को छन्द-बद्ध किया है। यों कवि की काफी रचनाएं सरल, सम्प्रेषणीय एवं स्पष्ट आशय को लिए हुए भी सुन्दर हैं। उसमें प्रतिभा है। कवि का भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल है।

—भगवान चारण

प्रधानाचार्य,
भारतीय विद्या मन्दिर
बीकानेर

क्रम

क्षणिकाएं : मुक्तक

१

आकाश को
देखते-देखते
वह धरती को
भिगोने लगा है
क्योंकि उसके
पालतू कबूतर को
बाज पकडकर ले
गया है ।

२

एक चीख
फटी हुई
टूटी हुई
सडक से निकलकर
मेरे कानो तक पहुची
और चुप हो गई
फिर न बुदबुदाई
न बोली ।

२

वन्द है,
कूडे के डिब्बे मे
इन्सानियत,
और मैं
उसी डिब्बे के
वशीभूत हू
क्योकि
खूवसूरत गुलदस्तो मे
हैवानियत को
फलते-फूलते देखता हू।

४

गगा बहुत दूर है,
इसलिए मैं यह
तीर्थ-यात्रा
पसीने से ही
नहाकर कर लेता हू,
यह समझकर
पसीना गगाजल है।

५

सुन रहा हू
घडी से
घडी की आवाज
घडी भर तो
साथ दो
शायद
सम्भावनाए
जहर के कटोरे मे
अमृत उडेल दे ।

६

मेरी पसन्द
मेरी तन्हाई है,
इसलिए मैं
तन्हा जिन्दगी के
ताने-वाने को
गिटार से ज्यादा
अच्छा वजाकर
वुलन्दी के साथ
जीना चाहता हू ।

७

पाव के नीचे से
निकल गई
एक छोटी-सी कीडी,
वडी-सी वात कहकर
कि
मारने वाले से
वचाने वाला वडा है।

८

लोग कहते है
उसके घर मे
देर है
अधेर नही
यह वात
मेरी समझ से वाहर है
क्योकि मैंने उसके घर को
नही देखा है ।

६

उन चेहरो मे से
मैं भी एक हू
हर दहाई के बीच
खडी इकाई की तरह
पर
अब न जाने
एक इकाई के
कितने चेहरे
विद्यमान है
मेरे घर मे
मेरी तरह ।

१०

वन्द कर लेता हू
उन्ही खिडकियो को
जो थोडी देर पहले खोली थी
ठण्डे मौसम की
ठण्डी हवाओ के लिए
पर
वन्द कर लेता हू
गन्दगी के गिद्धो को
आस-पास मडराते
देखकर।

११

एक सांस लेने के बाद
दूसरी सांस लेने के लिए
झुंझला रही है जिन्दगी
फुटपाथों पर
दो हाथों को
पचास गज लम्बा करके।

१२

धर्म का सकट
सकट का धर्म
ऐसा धर्म
मुझे नही चाहिए।

१३

हिमालय पर
ठहरी बर्फ
का अन्त
पानी है।

१४

अर्थी के
अर्थ को
अगर मानव समझता
तो कदाचित्
अर्थ का
सामर्थ्य समझता।

१५

धूप गले मे हाथ डालकर
मेरे साथ घूमती है
और लोग उसकी तपन से
डरते है ।

१६

एक बार
एक पलक का
झपकना
एक पल है।
पल को समझना
मेरी क्षणिका का
सुन्दर हल है।

१७

एक मुट्ठी मे आज है
एक मुट्ठी मे कल
कौन-सी मुट्ठी खोलू
तू सोचकर बता दे।

१८

आसुओ से
भीगे हुए शब्द
कुछ कागजो मे
जब्त है
जो
मुलायम नही
कुछ ज्यादा सख्त है
क्योकि
वक्त की बात
रक्त के
बनने के साथ-साथ
जो लिखी गयी है ।

१६

पैन के
निब की
लगी खरोंच से
झांकता
कोरा कागज
मुझे यह दिलासा देने आया है,
कि मेरे खून नही आया है
तो मेरी समझ मे आया
खरोंच का रूखापन।

२०

आसू ढलकता है,
जहर उगलता है,
तो कोरा कागज यह कहता है
कलम का यौवन पिघलता है।

२१

खाली कटोरे मे
कोई भिखारी
देख रहा है,
भारतवर्ष का
वर्ष-फल
शायद
भविष्य
भयानक है।

२२

पेट की आग के दाम कितने सस्ते ?
सस्ती चीजो के दाम कितने महगे ?

२३

काला है बदन
गोरा है कफन
साथी
हाथी के दात
और इन्सान की जात
फिर न पूछ।

२४

खुशिया है उनकी
गम है हमारे
वाह थर्मामीटर के पारे
बुखार के सहारे
दिन मे देखू कब तक
रात के तारे ?
खुशिया है उनकी
गम है हमारे।

२५

ऊचे बहुत ऊचे
इन बादलो ने
मोती बिखेर दिये है,
इसलिए कि धरती
शृगारी जोडा पहने
रास्ते हसे
कोई भोली किरण
रोशनी फेके ।

२६

तागेवाला
चाबुक मारता है,
औरगजेब की तरह
अपने ही घोडे को
पर
शाहजहा बेबस हे ।

२७

सीने की छलनी मे छना है गगाघाट
आओ रे आओ साथियो
मैं कराऊ तीर्थ
विना तकडी
विना वाट।

२८

आदमी की कमर को
सडक मत समझो।

२६

दर्द लुटाती
आ रही है,
कोई हस्ती
मेरे घर
उसके घर से
तो कोई शिकवा नही
मैं दर्दों को पनाह देकर
वह जामा पहनाऊंगा
कि वह अपने दिये
दर्दो को
फिर मुझसे चुराने आये।

३०

एक आसू है गुड्डा,
दूसरा आसू है गुडिया
चाहे खेलो बेटी मुनिया
बनाकर रूई की पुनिया
मेरी जानी-पहचानी है दुनिया ।

१

लिखे हुए कागजो का मेला हू मैं,
इस दौर का राही अकेला हू मैं,
जिद है कि मजिल खुद आये पास मेरे
अपने खयाल का आदमी पहला हू मैं।

२

खून की स्याही से कलम की रूवाई लिख देंगे
हम हसरतो की खुद अपनी दवाई लिख देंगे ।
मेरी सदायें गायेगी अपनी सफाई मे यारो
हम कलम की सारी आज कमाई लिख देंगे ।

३

ये तो मेरा मिट्टी के खिलने का खेल है,
ये तो मेरा जीवन सदियों पुरानी रेल है,
गम और खुशी तो दो डिब्बे है लोगो,
ये तो मेरा दिल की पटरी का मेल है।

४

काट रही है सास भी सास को
चुभो रही है मास मे फास को।
एक और दर्द की अनुभूति करने
सजा रही है जिन्दगी आस को।

५

किसी गाडी का पहिया वन जाऊ
किसी वहन का भैया वन जाऊ
भावना का सफर होगा तव पूरा
किसी की राहो का दीया वन जाऊ।

६

खुशी दे दे औरो को
मैं गम सहने की ताकत रखता हू
इरादे हैं जव अटल मेरे
तो वदल कैसे सकता हू।

७

नगे पावो से चिपकी है दुपहरी
भीगते पसीने से लिपटी है दुपहरी
आज पहचान करने मजदूर की वह
मजदूर की ताकत पर मरी है दुपहरी
मुझे दुपहरी से क्या शिकायत है यारो
जिन्दगी के साथ मेरी खडी है दुपहरी।

८

धूप के तवे पर सिकने लगी है जिन्दगी।
गहन गहरे अधेरो मे बिकने लगी है जिन्दगी।
जिन्दगी की दास्ता मत पूछ ए जिन्दगी।
बस अपने आप सिमटने लगी है जिन्दगी।

कविताएं

१

कागज की कोराई पर
रूप जडती है लेखनी
हीरे-सोने से अच्छा
शृंगार करती है लेखनी
कागज पर दुनिया
बसाती है लेखनी
कागज की खुशी पर
जान लुटाती है लेखनी
जीवनधारा की बात
कहती है लेखनी
जीने का तौर
सिखाती है लेखनी
अपना दस्तूर
निभाती है लेखनी।

२

कडकडाती धूप की
कुछ किरणें
मेरे घर की
छत पर
हमेशा पडती हैं।
और मैं
अतीत के क्षणो मे
उन किरणो की
शृखला गिनने लगता हू
तो मुझे लगता है,
ये किरणें
मेरी आभा की प्रतीक हैं।

३

शब्द का विष पीकर ही
नीला आकाश
नीलकठ और
नील सरोवर बना है।
हा, मीरा के हिस्से मे भी
विष का प्याला
विश्वास बना है।
शब्द के विष का विस्तार है
ये ससार अपना
इसलिए तो
नर नारायण का
सपना साकार बना है।

४

धुल गये दाग
हो गई राख
जूठा वर्तन
साफ करो
शब्दो का अर्थ
स्वीकार करो
जीवन मे कुछ काम करो
अपना नही तो
अपने पुरखो का नाम करो।
खून का रग
पीढी दर पीढी चलता है
सच कहता हू
खून का रग साफ करो।
आने वाले कल को
याद करो।
क्या होगा ?
ऐसा खयाल करो।
धुल गये दाग
हो गई राख
जूठा वर्तन
साफ करो।

५

सास भी नहा रही है,
खून मे जब
वास्ते खुदा के तुम चुप हो जाओ

सास है आशा का गीत
आशावादी तुम हो जाओ

जन्म है
मास की पौध
तुम जवान हो जाओ

सास भी नहा रही है
खून मे जब
वास्ते खुदा के तुम चुप हो जाओ ।

६

मिट्टी के बिछौने पर
शीतल पवन की
चादर ओढे
आसमान से
गिरने वाले
ओलो को
रूई के फैल
समझकर
जो सह रहा है
वह भिखारी नही
आदमी है।
आदमी के सिवा
कुछ भी नही
और हा,
जीवन को
सजोग की
योग की
कसौटी मे कसकर
सपने सजा रहा है
सजते-सवरते
सपनो के महल
अपनी आखो से ढलके
दो आसुओ से
धो रहा है।

वह भिखारी नही
आदमी है ।
आदमी के सिवा और
कुछ भी नही ।

७

उलझन से उलझा रहना
झाडी के काटो मे सोया रहना
और दर्द के साथ-साथ चलना
मुझे अच्छा लगता है ।
हा, जीवन-सघर्प के
चक्कर जैसी है
जव ये धरती
तो सघर्षों से टकराना भी
मुझे अच्छा लगता है ।
क्योकि मेरी लगन का
स्थायी रूप
तो सघर्ष का पहिया है,
जो माटी के घोल को
पीना चाहता है ।

८

महगे
और
महगे
भावो के
घेरे
घेरे खडे है
और
भावना
भावो के
थपेडो मे
महगाई की
वही चादर ओढे है
भूख से
बिगडे सन्तुलन को
प्रतिध्वनित
करने के लिए ।

९

वे नुकीले पत्थर
मेरे पैर मे चुभे है
पर भयभीत का
प्रश्न अकित होने से पहले ही
मैंने उन पत्थरो को उठाकर
उस कीकर की झाडी मे डाल दिये हैं
जहा किसी को फिर न चुभ सके।
क्योकि स्वार्थ से खडे
किये हुए पत्थरो का मुझे अहसास है।

१०

शून्य देकर
मेरे गुरुजी ने
मुझ को सारा ससार दे दिया है
इसलिए कि मैं समझ सकू
भविष्य की धारा को
भविष्य क्या है ?
भय का विचरण
या निडरता का दर्शन
सभव या
असभव की सत्यता।

११

आपकी खीची हुई लकीरो को मैं
लक्ष्मणरेखा तो नही समझ सकता
फिर भी उन लकीरो को
लाल, पीले और नीले रगो की
        रगभूमि समझकर
अपने जीवन मे उस भूमिका का
        आरम्भ जरूर कर सकता हू
क्योकि आपकी खीची हुई लकीरो के
        वे बिम्ब
        मेरी समझ मे आ गये हैं
जिनका समझना शायद आपके लिए भी
        मुश्किल है।

१२

एक कप चाय
दो जगह
बहस घंटे-घंटे
दो-दो घंटे
शासन, भाषण और राशन
की उलझनो मे उलझे,
ये मस्तिष्क, ये चेहरे
बनते-बिगडते शब्दो के घेरे
क्या मोड देंगे
त्रस्त मानवता को ?

१३

व्यवस्था की अवस्था वृद्ध हो गयी है,
दर्शक ताली बजायें,
हल्ला-गुल्ला करे,
टमाटर, आलू और अण्डे फेंके,
ऑर्डिनरी पेपर चर्चा का विषय बने
इससे अच्छा है,
गार्डन की बेंच पर बैठकर
अगले प्रोग्राम मे पैसा कमाने का
जरिया ढढे।

१४

बुलाये हुए
फक्शन पर
लिमिटेड दोस्त
मेरी दोस्ती का
दोस्ताना
प्लेट मे पडी
सुपारी
इलायची और
मिश्री की डली से
लगाने लगते है
मैं
दोस्तो की
साइकोलॉजी के
प्रयत्न मे
एक, दो और
तीन चेहरे
अपनी डायरी मे
नोट करना चाहता हू ।

१५

छेड-छाड की
भेडचाल से
वाल-वाल वचा
दोस्तो के हाथ
लम्वे थे
मैंने अपने छोटे हाथो को
समेट लिया
यह समझकर
गदराई-सी प्रीत
जीवन का मार्गदर्शन
नही वन सकती है ।

१६

अधनगी फैशन का
सर्टिफिकेट आज की होनहार
पढी-लिखी
वे लडकिया है,
जो घर का काम करने मे भी
अपनी तौहीन समझती है।
खाना बनाना तो दूर रहा
बच्चो के लिए भी आया का
इस्तेमाल करती हैं।
रेशमी रूमाल मे कशीदा
निकालना बहुत जरूरी समझती है।
पर क्रीम-पाउडर के
लिपे-पुते चेहरो के
अस्थि-पजर
सात फुट से भी गहरे
गदे गड्ढे मे मुझे
मिले हैं।
फिर भी पिक्चर, पिकनिक
और पार्टी की
बडी-बडी बातें
यो करती हैं
जैसे साठ फीट ऊची
एक नयी इमारत का
उद्घाटन अभी-अभी किया हो।

१७

लगन के खभो पर
बनी इमारत को
गिराने के प्रयत्न मे
कुछ लोग भूल जाते है
सोच नही पाते है
कि अत करण से
किसी के जडे
उखाडना कहा तक
उपयुक्त है ?
पर
जिसे लगना है
फलना है
फूलना है
भला कभी मिटाये मिटा है !

१८

रोटी के दो पहिये
मेरी पेट की गाडी के नीचे फिट है
आओ तुम्हे सैर कराऊं
इन्सानी दुनिया तुम्हे दिखाऊ
कैसे जीते हैं इन्सान तुम्हे वताऊ।

रोटी के दो पहिये
मेरी पेट की गाडी के नीचे फिट है
आओ तुम्हे सैर कराऊ
आटा और लकडी
वाट और तकडी
पर मकडी
का खेल दिखाऊ
तुम्हे जगाऊ
कैसे जीते है इन्सान तुम्हे वताऊ

रोटी के दो पहिये
मेरी पेट की गाडी के नीचे फिट है,
आओ तुम्हे सैर कराऊ
एक रोटी के आठ हिस्से
गरीव की जिन्दगी के है किस्से,
दुनिया ले रही है चस्के
लगाकर यारो मस्के
आओ ऐसे गगाघाट का तीर्थ कराऊ
इन्सानी दुनिया तुम्हे दिखाऊ

कैसे जीते है इन्सान तुम्हे बताऊ
रोटी के दो पहिये
मेरी पेट की गाडी के नीचे फिट है,
आओ तुम्हे सैर कराऊ।
देश खा रहे
विदेश घूम रहे
आओ ऐसा देश दिखाऊ
महगाई खडी है तनके
पेट बजा रहा हैं टनके
और ऐसा मन का गीत सुनाऊ
कैसे जीते हैं इन्सान
तुम्हे बताऊ ।

रोटी के दो पहिये
मेरी पेट की गाडी के नीचे फिट है,
आओ तुम्हे सैर कराऊ।

१६

तन भीगा हुआ है
मन लगा हुआ है
खीच रहा हूँ गाडी
बोझ लदा हुआ है
मजदूर हूँ गाव का
शहर का और मेरे देश का
जो खून-पसीने की कमाई मे
जुडा हुआ है
आज सडक पर नगे पाव चल रहा है
मदिर का भगवान्, मस्जिद का खुदा
गुरुद्वारे का गुरु और गिरजे का गॉड
सबको वह समझा हुआ है ।
तन भीगा हुआ है
मन लगा हुआ है ।

२०

सघर्प के सभी दिनो को मैं काटूगा
खुशी के हिस्सो मे गम मारे वाटूगा
इस दौर मे उडाई है जो जख्मो की पतग मैंने
फिर आने वाले कोई और दौर मे उतारूगा।
जिन्दगी की लटाई पर
ऐसी डोर चढाऊगा,
जख्मो की फिर मैं
पतग उडाऊगा।
पेच यो उलझते रहेगे।
उलझन का हक जमाऊगा,
दूर देश तक उडेगी पतग,
पहचान अपनी कराऊगा।
जीतकर हर वाजी
फ़ादर, पडित और काजी
सबको अपनी वात सुनाऊगा
जिन्दगी की लटाई पर ऐसी डोर चढाऊगा।

२१

दर्द की पहचान कौन कर सकेगा ?
उलझनो की अकड कौन सह सकेगा ?
दौर मे शोर मचा है आज लोगो
होश से वात कौन कह सकेगा ?
दौलत वालो ने खरीद रखी है दुनिया
गरीव लोगो की वात कौन सुन सकेगा ?
आज चैन से आराम कौन कर सकेगा ?
शोर-शरावे मे पैगाम कौन पढ सकेगा ?
आज हालात का पसीना हकीकत वना है
मजदूर का साथ कौन दे सकेगा ?
दर्द की पहचान कौन कर सकेगा ?
उलझनो की अकड कौन सह सकेगा ?

२२

कब मैंने धूप को चुराया है
कब मैंने चादनी को छुपाया है
रास्तो पर धडकनो के मेलो को
कब मैंने अपनी मजिल बनाया है
गम मेरा शरमा कर रह गया है
कब मैंने अपना गम बताया है
दिन के कलेजे से पूछा तक नही
कब मैंने भोर की किरण को जगाया है
दुपहरी का पसीना पोछा तक नही
कब मैंने शाम को फिर गले लगाया है
कब मैंने धूप को चुराया है
कब मैंने चादनी को छुपाया है ।

२३

कागज के घर मे रहते है हम,
शब्दो की दुनिया मे बसते है हम ।
नसीहत हमसे ले कोई आज,
फूलो के गुलदस्ते मे सजते है हम ।
कलम की कारीगरी है कागज पर
कारीगरी पर सजदे करते है हम
घुटन नही, चटक है मेरे कागजो मे
गाव-गाव, शहर-शहर हसते हैं हम
रास्ता है जब मजिल का पहला कदम
तो उम्मीद की वफा को मलते हैं हम ।

बात दर्शन की है और
मैं कुछ कह नहीं सकता
कलम से ज्यादा कागज को
चाहने वाला हो नहीं सकता

२१

कागज के घर मे
कितना खुश हू,
यह मेरे दस साल से
पैंतीस साल जानते है ।
जान-बूझकर मैंने अपने लिए
कागज का घर बनाया है ।

घर-घर मे,
मेरा कागज का घर
तुम्हारे दिल मे घर बनाये,
मैं समझूगा मेरे बेटे के
चले जाने के बाद ही
मेरा वश चल रहा है ।

ऐसे भी
एक बिम्ब के
अनगिनत चेहरे
विष्णु कलश के हीरे है ।

हरे-हरे राम,
हरे-हरे कृष्ण से
अच्छा फिर कौन है ?

जाओ,

हम सब मिलकर
कागज का घर बनायें ।

भावना,
तनहाई,
पहले तनिक कष्ट होगा ।

हां,
ऐसे दुखो से छनकर
मिलने वाला सुख
खुद ब्रह्म होगा ।
जिसका ब्रह्माण्ड
मेरा कागज का घर होगा ।

ऐसा मुझे विश्वास है,
इसी विश्वास के सहारे
मैं जीवित हू ।

'जीव बीज की फलावट है,
जीवन-धर्म निभाओ
कर्म के आकडे स्वत
अवसर आने पर
तुम्हारे सामने होगे ।'

२

कहकर मुकर जाते है,
दुनिया, लोग और समाज
फिर मैं आवाज किसे दू,
जबकि भरोसा
खरगोश का बच्चा बनकर
मेरा दिल बहलाने लगा है।
हा,
मैं भी अपने भरोसे के
विश्वास मे अटल हू।

धर्म कोई भी हो,
निभा रहा हू।
मेरे कदमो की पहचान
राह जानती है।
अकेला हू,
क्या हुआ ?
तन्हाई मेरे साथ है
जो साफ-सुथरी है,
उजली है,
चादनी के माफिक।
जो मुझे जानती है,
पहचानती है
इसलिए तुम्हारे न समझने का
कोई शिकवा नही।
सासो का आकाश है,
आरजू मेरी।

फिर देह-रूपी धरती को
क्या तलाश है ?
शायद,
मानवता, ममता और
समता के भाव
जो नजर पडकर भी
धुधले नजर आते है।
'नजरिया साफ है
झूठ आबाद है,
देश बरबाद है,
और गरीबी एक दाग है।'
इसलिए तो
आज जिन्दगी,
आग का खेल है।
यह खेल
सबको खेलना है।
धुए की शराब
अरे हा,
सबको पीनी है।
नीले आकाश मे बादल बनकर
सबको डोलना है।
हमे
धरती पर जहर पीकर,
बादल बनकर
अमृत बरसाना है।
यही बुरा बनकर
अच्छा बनने की कहानी है
जो भ्रम पैदा करता है,
ब्रह्म बन जाता है।
इसी का नाम दुनिया,
लोग, समाजऔर
ब्रह्माण्ड है।

३

सीने की छलनी मे
छना हुआ दु ख
हजार सुखो से अच्छा है ।
ऐसे, अच्छा क्या है ?
बुरा क्या है ?
आत्मा माने जो अच्छा है,
न माने जो बुरा है ।

तुम किसको पसन्द करते हो,
यह तुम्हारे ऊपर निर्भर है ।

यदि किसी के हित के लिए
बुरा भी किया जाये
तो भी अच्छा है ।

कभी-कभी
बुराई मे भी
जीवन-दर्शन छिपा रहता है ।

यह गूढ अर्थ की बात है,
गुड लपेटी कहावत नही ।

'बुराई बिन जीवन आधा'
यह बात बिलकुल सत्य है ।

अगर
मानव मे बुराई नही होगी,
तो
वह अच्छा वनने का प्रयास कैसे करेगा,
अपना कर्म कैसे करेगा ?

हा,
बुराई अच्छे वनने की मा है,
जीवन को झकझोरने की ऐसी आशा है
जो सीधे ब्रह्म से मिलाती है,
ब्रह्माण्ड सारा घुमाती है।
जैसे अन्तिम समय मे,
मुख से निकला एक 'राम'
तुम्हे स्वर्ग ले जाता है।
उसी प्रकार
बुराई न जाने कव,
अच्छा वनने का सकेत दे दे।

हा,
बुराई जीवन को अच्छा वनाने मे
कभी-कभी मदद करती है।

४

समय
पास रहकर भी
खिसक जाता है ।

समय
बलवान है ।
समस्या गम्भीर है,
समाधान ?

मुट्ठी भर धान की
वह ऊची दीवार है,
जिस पर
इन्सान चढता-चढता
थक जाता है
परन्तु
सघर्ष धर्म निभाता है,
मोह-माया का
झूठा जाल बिछाता है ।

हा,
अपने-पराये से
परिचित हो जाता है,
परन्तु
अपने आप मे

अपरिचित रहता है।

ब्रह्म के ब्रह्माण्ड मे
भ्रम बनकर
खुद डोलता रहता है
जो अपने आप को दु खी करता है।

यही कारण है
तुम्हारा
दु खी होने का।

कौन किसका है?
हम सबको बनाने वाला ब्रह्म है,
जिसका चिन्तन हमे करना है।

तप से, प्रण से और दिल से
तो ही,
हमारा कल्याण हो सकता है।

कल्याणकारी शख बजाओ,
शकर को बुलाओ,
सन्देह दूर करो,
जीवन को बनाओ।

जीवन खुद
अमृत का छीटा है,
प्रकाश है,
और दर्शन है।

५

मन बैठा
यह सोच रहा है,
जीवन क्या है
खोज रहा है।

अकेला,
बस अकेला,
दो, पाव
और दस से
फिर एक होने की,
एकान्त पाने की,
ब्रह्म को तलाश करने की।

भ्रम को मिटाने की
ऐसी लगन मे,
कोई नमक से भरी
मटकी मे
पानी घोल रहा है
शायद
मटकी का खार कम हो जाये,
खुद भ्रम-रूपी पानी
ब्रह्म बन जाये।

हा,
इसलिए खोज रहा है
कोई जीवन-दर्शन।
एकचित होकर,
एकान्त धर्म निभाओ।
अपने-अपने विश्वास को जगाओ
ब्रह्म स्वत मिल जायेगा।

६

जीवन की सच्चाई जानने के लिए
तुम्हें एक
सुदामा की बोदे चावल की गठरी,
एक कवि के
विचारो की गठरी के बारे मे
समझना पड़ेगा ।
वैसे तो
समझदार को इशारा ही काफी है ।
समझ, तप की पहली निशानी है
जो अच्छे विचारो से,
अच्छे कामो से
हासिल की जा सकती है ।
विश्वास को सजाना
और माजना
अपने आपको समझना
हां,
मानव की पहली तपस्या है ।
अगर
मानव जीवन मे सफल है
तो
उसकी अक्ल का पौधा
जरूर फूल निकालेगा,

अपनी महक फैलायेगा।
हां,
सच, तुम्हारा जीवन ही
जीवन मे, जीवन-दर्शन
बन जायेगा,
जिसका आनन्द लोग लेगे।
राम-रहीम, कृष्ण-करीम,
तुलसी, मीरा और सूर
न जाने
कितने अच्छे कर्मों के दीपक हैं
जो अपनी बुद्धि के बल पर
आज भी रोशन हैं।
हां,
बुद्धि, भगवान बुद्ध की बेटी तो है नहीं।
भक्ति है,
इसलिए तुम भी भक्तिभाव से
क्या सच है ?
क्या झूठ है ?
परख सकते हो।
जीवन क्या है ?
समझ सकते हो।
'समझ
जीवन का
ऐसा कवच है,
जो कभी भी
खण्डित नहीं होता।
अखण्ड ज्योति की तरह
जलता रहता है।'

७

प्रकाश-विम्ब
खुद चले आते है
विधे मोतियो की तरह
यह समझाने
कि जीवन क्या है ?
जीवन विचारो की जाली है,
जीवन चिन्तन की आरती है,
जीवन जन-जीवन की कहानी है,
जीवन जन्म-मरण की निशानी है
जिसको हम
अच्छे-बुरे विचारो से पैदा करते हैं।
अपनापन दर्शाने के लिए
हम यह भूल जाते है
कि स्वार्थ
हमारा सबसे बडा दोष है।
ऐसा जीवन
एक खाली कटोरा है,
कटोरे मे
डिब्बे का दूध डालो या गाय का,
ये तुम्हारे ऊपर निर्भर है।
बच्चा कभी नही कहेगा,
कि मुझे
मेरी मा का दूध पिलाओ।

अधकार भगाओ,
स्वार्थ मिटाओ,
ब्रह्म खोजो,
जीवन क्या है ?
समझो ।

८

गहन-गहरे अधेरो मे
तलाशता रहा,
जीवन क्या है
सोचता रहा।
जीवन
जीव की भाषा है
जो साधारण व्यक्ति
नही समझ सकता।
कौवा काव काव क्यो करता है?
कबूतर गुटरगू क्यो करता है?
शेर क्यो दहाडता है?
गाय भा-भा क्यो करती है?
कुत्ता भौ-भौ क्यो करता है?
ऐसे
न जाने कितने जीव
अपनी भाषा मे क्या बोलते हैं?
वास्तविकता पहचानना,
जीवन क्या है समझना,
मुश्किल है।
हा, एकान्त शान्ति की पहली वस्तु है,
वस्तुत तह मे पहुचना,
तत्काल अपने आप को समझना
भी वडा मुश्किल है।
हा, सचय किया हुआ धन

हा, झूठा मन भी
मनगढन्त वातो के साथ
कुछ समय तक ही जीवित रहता है।
उम्र भर तुम्हे सुख नही दे सकता।
आखिर तुम्हे अपने ओढे हुए सुख का
परित्याग करना पडेगा,
जीवन क्या है
समझना पडेगा।
जीवन अपने आप मे
एक दर्शन है,
अनुभूति है।
विना तेल की
वह वाती है,
जो हमेशा अपने आप मे
जगमग करती रहती है।
हम सव तो
साल मे एक वार दीवाली मनाते है,
परन्तु
जीवन अपने आप मे खुद दीवाली है,
जो खुश रहने की,
चिन्ता-फिकर न करने की,
हम सवको ज्ञान देती है।
चक्र भ्रम है,
भजन ब्रह्म है
इसान माने या न माने
यह सवका धर्म है।

९

घटता-बढ़ता पाप
और पुण्य
यही कहता है कि
तू सलीके से चल।

अपने आपको
कुछ बदल।

जीवन है तेरा
रामफल।

'हल का फल दर्शन है',
अनुभूति है,
अपने आप मे
भगवान की मूर्ति है।

मूर्ख,
तू पहचान,
तू जान-बूझकर
जानवर मत बन।

ये
इशारे है,
हृदय से
निकलने वाली भावना के।

'भाव न बढ़ा,
बाजार में न बेच,
वैर भाव न कर।
नतीजा सुन,
पास-फेल से न घबरा।

डरा हुआ,
घबराया हुआ,
व्यक्ति
कभी
जीवन-संघर्ष में
विजयी नही हो सकता।

इसलिए
तू
निडर होकर,
नर-नारायण की उपासना कर।

अपने भक्तिभाव का
विचरण कर
तेरे चित्त का
चितराग
खुद शक्ति प्रदान करेगा।

मैं
तेरे हृदय का
चितराम हूं
जो
तुझे लिखा रहा हूं,
समझा रहा हूं,
अपने कलश का अमृत
तुझे पिला रहा हूं।

तू
मेरे अमृत कलश के छीटो से
पापियो के पाप धो सके,
ऐसा तुझे
मैं
अपनी पावन गगाघाट का
धोबी बना रहा हू।

क्यो ?
तू कागज के घर का
हिस्सेदार है,
तेरी कलम मे ताकत है,
दर्द है,
गीत है,
धुन है।
इसलिए
ओ कलमगार,
मैं
अपने आकार से
तुझे
परिचयकरा रहा हू।

१०

जन्म का बन्धन है, चन्दन,
उसे झूठ मत समझो।
मुझे
अपना जीवन गुजारने दो।
पाप और पुण्य तो कर्म के हैं
दोस्त और दुश्मन।
पीडा, दर्द के
चितराम को
मुझे समझने दो।

मेरे चित्त की
क्या परिभाषा है?
क्या आशा है?
मैं जानता हू।
तुम्हारा
आशीर्वाद मुझे चाहिए।
मैं
जीवन-सघर्ष कर सकू,
और
इस सघर्ष मे विजयी हो सकू।
मैं
कलियुगी अर्जुन हू,
तुम

कलियुगी कृष्ण हो।
तुम
नयी गीता के आह्वान से
मुझे प्रकाश दो।

आकाश घंटियां बजाये,
धरती ढोल बजाये,
कोई फिर डमरूवाला
डमरू बजाये।
हां,
समुद्र तान निकाले
तो मैं जानूं—
ब्रह्मा, विष्णु और महेश
के इस देश को,
गंगा आकाश के
सुन्दर परिवेश को।

शक्ति-प्रभा
आनन्द मंगल से
सबकी
मंगल कामना कर रही है।

जीवन-मृत्यु
के चक्कर से भयभीत होना,
कतराना,
हम सबके लिए कहां ठीक है?
मिट्टी में मिलने वाला,
जल में घुलने वाला
खुद विष्णु उपासक
विष्णु
यही कह रहा है—
'जीवन-मृत्यु चक्कर का ही खेल है,
और कुछ भी नहीं।'

११

पसीने का बूटा
प्रिंटिग साडी से अच्छा
मजदूर की कमीज पर है
जो
जीवन की सच्चाई दर्शाता है,
जीवन क्या है, समझाता है।

हा,
जीवन कर्म का फल है,
मेहनत का हल है।

एक किसान की तरह
तुम्हे भी हल जोतना पडेगा
तभी तुम
जीवन मे जीने का विश्वास
पैदा कर सकते हो
वरना
तुम्हे काल उठाकर ले जायेगा।

ऐसे
काल के मुह मे
सभी को जाना है,
जाने-जाने मे अन्तर है
अन्तर्मन से पूछो

तुम्हे
स्वत ही ज्ञान हो जायेगा।

ज्ञान-चक्षु
तुम्हारे पास भी है,
ज्ञान बुद्धि
तुम्हारे पास भी है।
एक जन्म लेते बच्चे से सीखो,
वह तनी हुई मुट्ठियो मे
अपने काल को जकडे हुए रखता है
और
जीने का विश्वास खुद पैदा करता है।

१२

स्वार्थ और निस्वार्थ मे
जितना अन्तर है,
उतना ही
मन और आत्मा मे ।

मन
स्वार्थ का प्रेमी है,
आत्मा
निस्वार्थ की भक्ति ।

हा,
भक्तिभाव से
मानव
मन्थन करते-करते
आत्मा की ओर
अग्रसर हो सकता है,
नि वार्थ भाव
प्रकट कर सकता है,
स्वय
ब्रह्म बन सकता है,
आवाज के तप ज्ञान से
भला कर सकता है ।

सच्चा एक साधु,

एक महात्मा, एक फकीर
हजार सुख किसी की
झोली मे डाल सकता है
क्योकि
उसने आत्मा को देखा है,
समझा है कि
स्वार्थ किसी का उम्र भर
थोडे ही साथ रहता है।

खैर,
कोई आदर-सत्कार करके,
कोई स्वार्थ लेना चाहता है
तो भला मैं
मना भी कैसे कर सकता हू।

ब्रह्म ज्ञान से
ज्ञान दे सकता हू,
भ्रम मिटाना या ना मिटाना
उसके ऊपर निर्भर है।

कोई
अपने लिए कुआ खोदे
तो
मैं क्या करू?
कोई
अपने लिए कुआ खोदे
और
सैकडो व्यक्तियो को
उसका पानी नसीब हो,
स्वार्थ मे
निस्वार्थ की भावना हो,
अच्छी कामना हो,
वही जीवन दर्शन है।

१३

मेरे कर्म का फल
अगर
तुम देना चाहते हो,
तो
किसी भूखे को रोटी,
नगे को कपडा दे दो।
मेरा कर्मफल
सच, मुझे मिल जायेगा।
हा,
इसी फल की आकाक्षा मे
मैंने
हृदय से निकलने वाले
दर्शन लिखे हैं।

दर्शन
भावना का भावी कलश है,
दर्शन
अनुभूति का अनूठा मन्थन है,
दर्शन
कल्पना की कसौटी है,
दर्शन
दर्द की पहली सुगन्ध है।

इन सबके साथ रहकर,
सच्चाई क्या है?

जीवन क्या है ?
समझने की
मैंने चेष्टा की है
परन्तु
एक 'भी' है
जो
मेरी बुराई से अंकित है।
इसलिए
समाज, लोग और दुनिया
हो सकता है,
मुझे बुरा समझे।
ऐसे भी
मैं
साक्षात् ब्रह्म नही हू।
मानव हू,
मानवीकरण से
जुडा हुआ हू।
मुझमे
बुराई ज्यादा है,
अच्छाई कम है।
यह
मेरी कमजोरी नही,
मेरा स्वार्थ है
जिसके वशीभूत मैं हू।
इसलिए
खुद ब्रह्म नही बन सकता,
मैं खुद
दर्शन नही बन सकता।
आवाज ब्रह्म है
इसलिए मैं
सारे ब्रह्माण्ड को
आवाज दे सकता हू,

सारी दुनिया को
नये-नये
दर्शन दे सकता हू।
दर्शन क्या है?
समझा सकता हू।
इसी प्रयास मे
जुडा हुआ मैं,
कलम और कागज का
सपना देख रहा हू,
आने वाले कल का
दर्शन देख रहा हू।

ऐसे तो,
आने वाले कल के बारे मे सोचना,
एक समय का
कालिदास बनना है
परन्तु
समय बलवान है,
वह
कुछ भी बना सकता है—
'मूर्ख से ज्ञानी',
'ज्ञानी से मूर्ख'
जैसे
एक अच्छा लिखने वाला
लेखक भी
समय के थपेडो से,
सडक पर
पागल हुआ घूमता है,
और एक
कुछ नही लिखने वाला
व्यक्ति भी
अच्छा लिखने लगता है।

यह सब
समय का करिश्मा है।

कलम से
कागज की दुनिया बसाओ,
भ्रम मिटाओ,
ब्रह्म को पाओ,
तुमको
तुम्हारा
कर्मफल जरूर मिलेगा।

१४

प्यारा था,
हसमुख था,
सुन्दर था,
मेरे घर के आगन मे उगा हुआ वह तारा,
जो सचमुच मेरा वचपन था।
वह टूट गया है,
छिन्न-भिन्न हो गया है,
विखर गया है,
यादे रह गई हैं,
दर्द की वीणा सुनाने के लिए।
हा, मेरे वेटे का नाम नवीन था,
अव मैंने उसके चले जाने के वाद
उसका नाम दर्द रख दिया है।
अव मेरा 'दर्द'
दर्द वेटा है।
'जिसके सहारे आसू वन जाये दाना,
जीवन वन जाये गाना।'
यह स्वर,
यह सगीत
मेरे कानो मे गूजता रहता है।
मै भूल नही सकता
वह मनहूस दिन,
जिस दिन मैं अपनी खुशिया

अपने कधो पर उठाकर
यमुना नदी मे डालने चला गया।
पानी और मिट्टी का वह पुतला,
थोडी ही देर मे पानी मे,
गुम हो गया।
मैं देखता रहा,
आसू बहाता रहा
तो, महसा एक आवाज आयी।

मैंने उस आवाज का
दर्शन लिख दिया है।
'एक मा के पेट मे से निकालकर
दूसरी मा के पेट मे डाल दिया है,
यमुना नदी नही, मा है सबकी,
मा के चरणो मे अपना फूल वार दिया है।'

तो, मैं रोते-रोने
चुप हो गया।
कितनी अच्छी है यमुना मा,
जो मेरे लाल को
खिलाने को इतनी आतुर है।
मैंने यमुना मा को
प्रणाम किया, और
चला आया अपने शहर।

देखते-देखने
सब अपने पराये हो गये।
खैर, सहता रहा,
जीवन के आगे खडे
सघर्ष से लडता रहा।
ऐसे भी जीवन मघर्ष है।
हा,
सुख-दु ख

एक दिल के दो साजन है,
दो चेहरे है,
दो अरमान है ।
अरमानो की राख,
धरती मा की गोद मे
उडती है,
आकाश की हवा मे
उडती है ।

कुछ सम्मतियां

नवल बीकानेरी के
मुक्तक और क्षणिकाये
सुमेरु जैसी कणिकाये
मन को उत्थान दे,
उद्‌बोधन ज्ञान दे।
नवल बीकानेरी का
'जीवन-सार'
हो सबका जीवन-उद्धार
और
कवितायें
जन गण मन का अन्तर्स्वर बन जाये।
नवल बीकानेरी का
'कागज का घर'
जिसका एक-एक अक्षर
हो शत-शत ताजमहलो मे भी सुन्दर।

—निर्भय हाथरसी

णिकाओं का वैशिष्ट्य तीन बिन्दुओ पर निर्भर है—क्षण की पकड, विचार-
ण की इकाई का निर्वाह तथा कसावट। श्रेष्ठ क्षणिकाओ को यदि इस कसौटी

पर देखा-परखा जाय तो नवल बीकानेरी एक अच्छे कवि सिद्ध होते है।

उनकी भाषा सहज, बोधगम्य एव सपेपणीय है। बोझिलता व दुरूहता से परे रहकर कवि ने अपने पाठको—श्रोताओ से सीधा सवाद किया है।

नवल की क्षणिकाओ, मुक्तको तथा लम्बी कविताओ मे हर समय ऐसा लगता है कि कवि कुछ न कुछ कहने को आतुर है। उनकी अधिकाश रचनाए इसी छटपटाहट से नि सृत है अत अपनी विशेष निजता लिये हुए है। यही निजता व्यापक परिवेश मे पाठको की अनुभूति का अग बन जाती है।

कवि-कर्म को उन्होने अत्यन्त गभीरता से लिया है। रचना लिखने मे उन्हे जितना सुख मिलता है, लोगो को सुनाने व उनके विचार लेने मे भी उन्हे वही आनद मिलता है। इससे उनकी रचनाए और अधिक परिष्कृत होती जाती है।

नवल की अधिकाश रचनाए चिन्तन-प्रधान हैं। छोटी है अत उबाऊ नही है। कथ्य के एक अत्यन्त व्यापक फलक पर उतरी ये रचनाए समाज के सताप-सत्रास, दु ख-दर्द, उत्पीडन के विरुद्ध सघर्ष, मानवीय सहानुभूति आशावाद, विश्वास एव ईश्वरीय सत्ता के प्रति मौलिक दृष्टिकोण की है।

—भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

रचना होने के लिए आने वाला शब्द इस शर्त के साथ आता है कि रचनाकार पहले उससे स्वय को सस्कारित करे, फिर शब्द को। इस तरह रचना हुआ शब्द अपने पाठक और श्रोता को भी सस्कारित करता है। शब्द-रचना की, मेरी दृष्टि मे यही सार्थकता है।

आशा करू कि श्री नवल बीकानेरी मेरे इन शब्दो को अपना सोच देंगे, सम्भव हो तो रागात्मक सम्बन्ध भी बनाए।

मैं उनकी रचनाओ का पाठक-श्रोता रहा हू। उन्हे अपने दु ख-सुखो-अनुभवो को कुन्दन बनाना है। उनकी रचना-यात्रा ऊर्ध्वमुखी हो—मेरी कामना, मेरा स्नेह।

—हरीश भादानी

'नवल बीकानेरी' की रचनाए मैंने पढी है। अब उनका सग्रह भी प्रकाशित हो रहा है। 'कागज का घर' बनाने वाले कविता के इस युवा तीर्थयात्री को मेरी शुभकामनाए। जिस पीडा, विश्वास तथा समर्पण के साथ उन्होने जो पथ चुना है उस पर बाधाओ के बावजूद वे चलते रहेगे, ऐसी आशा है। 'मेरे कदमो की पहचान राह जानती है,' 'एक किसान की तरह / तुम्हे भी यह हल जोतना पडेगा,' 'पसीना गगाजल है,' 'धर्म का सकट / सकट का धर्म / ऐसा धर्म / मुझे नही चाहिए' आदि अभिव्यक्तिया कवि की सभावनाओ व धरती से जुडी अनुभूतियो को बल देती है। वह गरीबी, शोषण, धर्माडम्बर से परिचित है, तभी उसकी दृष्टि व्यापक है। वह जीवन की गतिशीलता का पक्षधर है और आशावादी है। भविष्य मे नवल बीकानेरी की रचनाओ मे और भी परिपक्वता तथा परिमार्जन आयेगा।

—योगेन्द्र किसलय

मुझे प्रसन्नता है कि नवल बीकानेरी अपना काव्य-सकलन प्रकाश मे ला रहे है। क्षणिकाओ के कवि नवल ने जीवन के सम्पूर्ण फलक पर रग-बिरगे चित्र अकित किये है। कवि के जीवन मे सुख, दु ख व प्रेम की त्रिवेणी बहती रहती है। सवेदनशील हृदय हो तो कविता बनती है। कविता बनाई नही जाती, स्वय जन्म लेती है कविता। नवल के कथनानुसार 'मेरी कविता मुझे लिखने के लिए मजबूर करती है तो मैं लिखता हू।'

पल-प्रति-पल अपने एक-एक सवेदन को क्षणिकाओ मे बाधे रखना, उन्हे निरन्तर बुनते रहना, कवि का यह ईमानदार प्रयास उसे और अधिक अच्छा रचने की तरफ अग्रसर कर रहा है।

— मोहम्मद सदीक

नवल बीकानेरी की रचनाओ को सुनने का अवसर मुझे मिलता रहता है। कविताए तथा क्षणिकाए निश्चय रूप से सराहनीय है क्योकि वे कवि की खुद की

विचारधारा पर सीमित है तथा उन पर किसी अन्य कवि या लेखक की रचनाओं की छाप नही है। एक समृद्धिशाली वातावरण मे पलने के बावजूद नवल बीकानेर ने असहाय, गरीब तथा समाज से त्रस्त इन्सानो के दुख-दर्द को अंकित ही नही किया है बल्कि खुद को उनके दु ख मे सहभागी-सा बना दिया है। निश्चय ही उनका प्रथम सग्रह 'कागज का घर' कवि तथा लेखक जगत् मे सराहा जायेगा।

—बी० आर० गोस्वामी

भाई नवल की कविताए, क्षणिकाए तथा जीवन-सार जिन भाव तथा चिन्तन से 'कागज का घर' मे चित्रित की गयी हैं वे भाषा, शैली तथा शिल्पगत जहा अनूठापन लिये हुए है वही उन्होने बिम्बो और प्रतीको के माध्यम मे अपनी भावाभिव्यक्ति को सशक्त, बोधगम्य तथा अपने आप मे अलग-थलग व्यक्त किया है जो हिन्दी साहित्य मे अपना एक विशिष्ट स्थान लेगी, ऐसी आशा है।

—ए० बी० कमल